मेरे

पति

को समर्पित

BALA... BARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI ... KOLHAPUR
KOLHAPUR

डॉ. अर्जुन गणपति चव्हाण
एम्.ए., बी.एड्.,पीएच्.डी.
प्रपाठ एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

संस्तुति

मैं संस्तुति करता हूँ कि कु. सरिता बाबू. कांबळे द्वारा लिखित "बिस्रामपुर का संत उपन्यास का अनुशीलन" लघुशोध-प्रबंध परीक्षणार्थ अग्रेषित किया जाए ।

स्थान : कोल्हापुर ।

तिथि : 14 FEB 2003

(डॉ. अर्जुन चव्हाण)
अध्यक्ष,
हिंदी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर-४१६००४.

डॉ. यादवराव् बाबुराव धुमाळ

एम्.ए.,पीएच्.डी.

प्रपाठ एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग,

वेणूताई चव्हाण कॉलेज, कराड

अध्यक्ष, हिंदी अध्ययन मंडल,

शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

सदस्य, विद्वत् सभा,

शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रमाणपत्र

मैं यह प्रमाणित करता हूँ कि कु. सरिता बाबू कांबळे ने मेरे निर्देशन में ''बिस्रामपुर का संत उपन्यास का अनुशीलन'' यह लघु शोध-प्रबंध शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की एम्.फिल. (हिंदी) उपाधि के लिए लिखा है । पूर्व योजनानुसार संपन्न इस कार्य में शोध-छात्रा ने मेरे सुझावों का पूर्णत: पालन किया है, जो तथ्य इस लघु शोध-प्रबंध में प्रस्तुत किए हैं, मेरी जानकारी के अनुसार सही हैं । शोध-छात्रा के कार्य से मैं पूरी तरह से संतुष्ट हूँ । इस लघु शोध-प्रबंध को आद्योपांत पढ़कर ही मैं इसे परीक्षणार्थ अग्रेषित करने हेतु अनुमति प्रदान करता हूँ ।

स्थान : कोल्हापुर ।

तिथि : 14 FEB 2003

(डॉ. यादवरावं धुमाळ)

प्रा. डॉ. [illegible]

रीडर एवं [illegible] विभाग

वेणूताई [illegible] कॉलेज

कराड (महाराष्ट्र)

प्रख्यापन

"बिस्रामपुर का संत उपन्यास का अनुशीलन" यह लघु शोध-प्रबंध मेरी मौलिक रचना है, जो शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की एम्.फिल. (हिंदी) उपाधि के लिए प्रस्तुत की जा रही है । प्रस्तुत रचना इससे पहले इस विश्वविद्यालय या अन्य किसी भी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई है ।

(कु. सरिता बाबू कांबळे)

स्थान : कोल्हापुर ।

तिथि : 14 FEB 2003

प्राक्कथन

प्राक्कथन

प्रेरणा एवं विषय-चयन -

एम्.ए. उपाधि के लिए अध्ययन काल में मैं उपन्यास विधा के प्रति अधिक आकर्षित हुई । इस दौरान मैंने श्रीलाल शुक्ल जी का 'राग-दरबारी' उपन्यास पढ़ा । इस उपन्यास का कथानक पढ़कर उपन्यास में चित्रित सामाजिक आर्थिक, राजनीतिक समस्याओं का सूक्ष्म चित्रण पढ़कर मैं प्रभावित हुई ।

उस समय मेरा मन-मस्तिष्क पुन:-पुन: विचार कर रहा था कि उपन्यासकार ने कितनी सूक्ष्मता तथा सफलता से जन-जीवन को प्रस्तुत उपन्यास में उद्घाटित किया है इस विचार को विराम तब मिला जब मेरे आदरणीय गुरुवर्य श्री. कदम जी ने शुक्ल जी के उपन्यासों की एक सूची मुझे बता दी थी . . . ।

एम.फिल. के लिए शोध-विषय चयन के सिलसिले के दौरान मैंने अपने लिए उपलब्धि सिद्ध हुए पूजनीय गुरुवर्य डॉ. वाय. बी. धुमाळ जी से विषय चयन के बारे में विचार-विमर्श किया । आपने मेरी रूचि देखकर सशक्त रचनाकार श्रीलाल शुक्ल जी के 'बिस्रामपुर का संत' शोध का विषय बनाने का सुझाव दिया । शुक्ल जी का नाम सुनते ही मुझ 'राग-दरबारी' उपन्यास का स्मरण हुआ जिसका अध्ययन मैंने एम. ए. में किया था । अत: शुक्ल जी के 'बिस्रामपुर का संत' उपन्यास पर अनुसंधान करने का सौभाग्य प्राप्त होने की संभावना से मेरा मन उल्हासित और सचेत हुआ । आपने श्रीलाल शुक्ल का उपन्यास तथा पत्र-पत्रिकाएँ पढ़ने की सलाह दी ।

शोध विषय का महत्त्व -

'बिस्रामपुर का संत' ग्रामांचल पर आधारित एक सफल उपन्यास है । इसमें लेखक ने ग्रामीण राजनीति की पोल खोलने का प्रयत्न किया है । इस उपन्यास में भूदान आंदोलन

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR
SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

की पृष्ठभूमि पर विनोबा द्वारा चलाया गया यह आंदोलन कितना सफल हुआ इस पर चिंतन करने के लिए श्रीलाल शुक्ल ने पाठकों को बाध्य किया है । इसमें सहकारी संस्थाओं पर व्यंग्य करके इस भूदान आंदोलन की पोल खोलने का भी प्रयत्न किया है । बड़े-बड़े जमींदार भूदान के आंदोलन में अपने महत्त्व को कैसे बढ़ा रहे थे इस पर लेखक ने गहराई से व्यंग्य किया है । इस उपन्यास के पात्रों को परिवेशानुकूल ढालकर पात्रों को भूदान आंदोलन की स्थिति और गति से परिचित किया है स्पष्ट है कि यह उपन्यास तत्कालीन समाज जीवन की तलाश करनेवाला होने के कारण इस उपन्यास के प्रति मेरा आकर्षण बढता गया और इसी की दृष्टि से अनुसंधान के लिए मैंने विषय बनाया ।

अनुसंधान के प्रारंभ में उत्पन्न सवाल -

श्रीलाल शुक्ल के 'बिस्रामपुर का संत' उपन्यास का अध्ययन करते समय मेरे मन में निम्नांकित सवाल निर्माण हुए -

1. 'बिस्रामपुर का संत' शीर्षक का अर्थ क्या होगा ?
2. पात्रों का चरित्र-चित्रण किस प्रकार होगा ?
3. आलोच्य उपन्यास का वातावरण कैसा होगा ?
4. विवेच्य उपन्यास में लेखक ने कौनसी भाषा-शैली का प्रयोग किया हुआ होगा ?
5. आलोच्य उपन्यास का प्रतिपाद्य क्या होगा ?
6. विवेच्य उपन्यास में जन-जीवन के किन समस्याओं का चित्रण हुआ होगा ?

अध्ययन के उपरान्त प्रश्नों के जो उत्तर मेरी दृष्टि से प्राप्त हुए हैं उन्हें उपसंहार में दर्ज किया गया है । अध्ययन की सुविधा हेतु प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध का निम्नांकित अध्याय में विभाजन किया हैं -

प्रथम अध्याय - 'बिस्रामपुर का संत' उपन्यास की कथावस्तु का अनुशीलन ।

इस अध्याय में उपन्यास की कथावस्तु का संक्षेप में परिचय दिया है । उनका उपन्यास किस विषय से संबंधित है, इसे प्रस्तुत किया है अध्याय के अंत में निष्कर्ष दर्ज किया है ।

द्वितीय अध्याय - 'बिस्रामपुर का संत' उपन्यास में पात्र एवं चरित्र-चित्रण का अनुशीलन ।

इस अध्याय में प्रस्तावना, चरित्र-चित्रण का स्वरूप आदि का सैद्धांतिक जानकारी प्रस्तुत की गई है । इसके पश्चात आलोच्य उपन्यास के पात्रों का चरित्र-चित्रण किया है । अंत में निष्कर्ष दिया है ।

तृतीय अध्याय - 'बिस्रामपुर का संत' उपन्यास में वातावरण का अनुशीलन ।

प्रस्तुत अध्याय में वातावरण का स्वरूप, देशकाल-वातावरण के गुण, देशकाल वातावरण से तात्पर्य, साथ ही आलोच्य उपन्यास में चित्रित वातावरण को प्रस्तुत किया है । अंत में निष्कर्ष दर्ज किया है ।

चतुर्थ अध्याय - 'बिस्रामपुर का संत' उपन्यास में भाषा-शैली का अनुशीलन ।

आलोच्य उपन्यास में भाषा के अंतर्गत विभिन्न भाषाओं के शब्दों का प्रयोग हुआ है जिसमें अरबी, फारसी, अंग्रेजी शब्दों का उपयोग हुआ है । साथ ही देशज शब्द, काव्यार्थक शब्द, द्विरूक्त शब्द, अपशब्द आदि का भी प्रयोग हुआ है । भाषा को प्रभावात्मक बनाने के लिए मुहावरों से युक्त भाषा का भी प्रयोग किया है ।

शैली के अतंर्गत, वर्णनात्मक शैली, व्यंग्यात्मक शैली, आत्मकथनात्मक शैली, नाटकीय शैली, पत्रात्मक शैली, स्वप्नविश्लेषणात्मक शैली, फ्लॅश बॅक शैली तथा दृश्य शैली का प्रयोग किया है । अंत में निष्कर्ष दर्ज किया है ।

पंचम अध्याय - 'बिस्रामपुर का संत' उपन्यास में उद्देश्य का अनुशीलन ।

इस अध्याय के अंतर्गत प्रस्तुत उपन्यास के उद्देश्य को उद्घाटित किया है । राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक समस्याओं को चित्रित करके भूदान आंदोलन की सफलता-असफलता पर प्रकाश डालना लेखक का उद्देश्य है तथा राजनीतिक नेताओं की ढोंगी प्रवृत्ति को पाठकों के सामने प्रस्तुत करना आलोच्य उपन्यास का उद्देश्य है ।

षष्ठ अध्याय - 'बिस्रामपुर का संत' उपन्यास में समस्याओं का अनुशीलन ।

इस अध्याय के अंतर्गत प्रस्तावना तथा उपन्यास में चित्रित समस्याओं को प्रस्तुत किया है । इस अध्याय में उपन्यास में चित्रित सामाजिक, राजनीतिक समस्याओं का विवेचन किया है । अध्याय के अंत में जो निष्कर्ष प्राप्त हुए है उसे दर्ज किया है ।

अंत में उपसंहार दिया है, जिसके अंतर्गत सभी अध्यायों के निष्कर्षों को सार रूप में प्रस्तुत किया गया है ।

ऋणनिर्देश

इस शोध-कार्य को संपन्न बनाने में जिन विद्वानों ने तथा आत्मीयजनों ने सहायता की है उन सब के प्रति आभार प्रकट करना मैं अपना कर्तव्य समझती हूँ ।

प्रथमत: मैं अपना सौभाग्य प्रकट करती हूँ कि मुझे आदरणीय गुरुवर्य डॉ. वाय. बी. धुमाल जी, अध्यक्ष, हिंदी विभाग, वेणूताई चव्हाण कॉलेज, कराड के निर्देशन में प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध का कार्य करने का सुअवसर मिला । आपके अमूल्य निर्देशन में मैं अपना शोध-कार्य पूरा कर सकी । गुरु के साथ-साथ एक शुभ चिंतक के रूप में भी आपने मुझे प्रेरित किया । मेरी अनेक समस्याओं को हल किया । आपका यह आत्मीयतापूर्ण स्वभाव मुझे हमेशा याद रहेगा, जिसके लिए मैं आजीवन कृतज्ञ रहूँगी ।

मेरे आदरणीय गुरु डॉ. अर्जुन चव्हाण, अध्यक्ष, हिंदी विभाग, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर ने अपनी अन्य व्यस्तताओं के बावजूद भी मुझे समय-समय पर मार्गदर्शन किया अत: आपके प्रति मैं कृतज्ञ हूँ ।

साथ ही डॉ. पांडुरंग पाटील, डॉ. के. पी. शहा, डॉ. आशा मणियार, डॉ. केशव प्रथमवीर तथा प्रो. यशोदानंदन द्विवेदी आपका भी मुझे समय-समय पर मार्गदर्शन मिला अत: आपके प्रति मैं कृतज्ञता प्रकट करती हूँ ।

मेरी माताजी के ऋण से मुक्त होना मेरे लिए संभव नहीं । मैं अपने ईश्वरतुल्य माँ के चरण कमलों में नतमस्तक होना चाहूँगी । उसका आशीर्वाद हमेशा मेरे साथ होने के कारण ही मैं यह लघु शोध-प्रबंध बिना अवरोध पुरा कर सकी । साथ ही मेरी श्रद्धेय सासू जी तथा ननंद सौ. विद्या का भी आभार प्रकट करना चाहती हूँ, जिन्होने मुझे पारिवारिक समस्याओं से दूर रखकर हमेशा मेरा मनोबल बढ़ाया ।

साथ ही मेरे पति बाबासाहेब कांबळे का भी मुझे विशेष सहयोग मिला, उनके सस्नेह सहयोग से ही मेरे शोध कार्य का काम आसान हुआ, अत: आपके प्रति कृतज्ञता प्रकट करना मैं अपना कर्तव्य समझती हूँ ।

कांबळे परिवार क।। बीड़, आपने हमेशा मुझे इस लघु शोध-प्रबंध को संपन्न बनाने में प्रोत्साहित किया, अत: आपकी मैं कृतज्ञ हूँ ।

वाय. डी. पाटील परिवार, राजेंद्र नगर तथा इंदूमती सावंत जी का भी मैं दिल से आभार प्रकट करती हूँ । आपने मुझे इस लघु शोध-प्रबंध को पूरा करने के लिए हमेशा प्रेरणा प्रदान की और मेरा मनोबल बढ़ाया । साथ ही बाळासाहेब शिंदे, महेश घाटगे, किरण सरनाईक आपके प्रति मैं कृतज्ञ हूँ ।

मेरे मित्र-परिवार में - केतकी, माधुरी, सुजाता, शैलजा, सुनिता, चंदा, दिलीप, धनराज, अमर, अर्जुन, रसीद, जितेंद्र आपने भी मुझे समय-समय पर काफी मदत की है अत: आपके प्रति मैं आभार प्रकट करती हूँ । साथ ही नवले, बन्ने तथा कांबळे मामा की भी मैं आभारी हूँ ।

शिवाजी विश्वविद्यालय के ग्रंथपाल और उन सभी कर्मचारियों के प्रति मैं कृतज्ञ हूँ, जिन्होंने मुझे प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से मदद की ।

इस प्रबंध का आत्मीयता और तत्परता से सुचारू रूप से टंकन-लेखन करनेवाले अनिल साळोखे, कोल्हापुर ने शीघ्रता से किया हैं । मैं उनकी आभारी हूँ ।

अंत में सभी गुरुजनों, सहृदयों एवं आत्मजनों की प्रेरणा तथा सदिच्छाओं के लिए पुनश्च धन्यवाद ।

(कु. सरिता कांबळे)